जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

मार्च 2026

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
कार्यकारी संपादक
विवेक मिश्र
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
कृष्ण कुमार 'अजनबी', अजय कुमार सिन्हा, विकेश निझावन, अशोक अंजुम

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

मार्च, 2026

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-473 वर्ष : 40 अंक : 8 मार्च 2026

आवरण : आस्था

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. महज इतनी सी ही तो बात थी - दैट वाज़ इट! : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

स्मृति शेष
12. मृत्यु ध्रुवांत है : राजी सेठ

मुड़ मुड़ के देख
19. पांड़े कौन कुमति तोहें लागी : काशीनाथ सिंह ('हंस', जनवरी 2001)

कहानियां
29. कीड़े : मोहनदास नैमिशराय
36. ब्लाइंड डेट : पवन माथुर
44. विद्या का अवसर : श्यौराज सिंह बेचैन
50. सफेद चादर काली रातें : ज्ञानचन्द बागड़ी
56. चेची : श्यामल भट्टाचार्य (बांग्ला कहानी) (अनुवाद : कुमार शाश्वत)

कविताएं
54. महुआ माजी
55. सोनी पांडेय, मुकुल शर्मा

संस्मरण
62. हमारी रूस वापसी : अन्ना ग्रिगोरिएव्ना (अनुवाद : रूपसिंह चंदेल)

लेख
74. आज हिंदुओं को क्या करना चाहिए? : अपूर्वानंद

यात्रा-वृत्त
78. कोलाज-ए-सफर : रामशरण जोशी

उपन्यास अंश-3
82. सोमालिया का यातनाघर : राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

लघुकथा
81. कुर्सी : अजय रोहिल्ला

ग़ज़ल
43. रामबहादुर चौधरी चंदन

परख
88. रचना और आलोचना एक साथ : माधव नागदा
91. आधे-अधूरे पुरुषत्व की दीनता का कोलाज : नवरतन पांडे

साहित्यनामा
93. सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
97

महज इतनी सी ही तो बात थी-दैट वाज़ इट!

1999 में जोएल शूमाकर द्वारा निर्देशित, निकोलस केज और होआक़िन फ़ीनिक्स द्वारा अभिनीत एक फ़िल्म आई थी '8 एमएम'. इस फ़िल्म को बर्लिन अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में देखने के उपरांत दर्शकों ने खड़े होकर इसे सम्मान दिया था और यह गोल्डन बेअर अवार्ड के लिए भी चयनित हुई थी. किंतु अत्यधिक हिंसा और विचलित कर देने वाले दृश्यों के कारण यह फ़िल्म समीक्षकों की नज़रों में फिसलती चली गई. इसमें स्क्रिप्ट की कुछ कमज़ोरियां भी इसका कारण रहीं. फ़िल्म में एक बेहद रईस ख़ानदान के स्वामी की मृत्यु के उपरांत बूढ़ी पत्नी को उसकी तिजोरी में एक आठ मिलीमीटर की फ़िल्म मिलती है. उसमें एक किशोरी के साथ शारीरिक छेड़छाड़ के उपरांत, अचानक उसे चाकू से काट डालने का भयानक दृश्य इतना वास्तविक दिख रहा था कि वह बुढ़िया सच्चाई पता लगाने के लिए बेचैन हो जाती है. वह एक प्राइवेट डिटेक्टिव निकोलस केज की सेवाएं लेती है. पोर्न और स्नफ़(अतिरेक यौन हिंसा और हत्या तक को दर्शाते) सिनेमा की डरावनी और गंदी गलियों से गुज़रते हुए इस प्राइवेट डिटेक्टिव को पता चलता है कि हॉलीवुड की चमक-दमक से प्रभावित घर से भागी इस किशोरी की सचमुच ऑन कैमरा हत्या कर दी गई थी—सिर्फ़ एक अति धनी और ताकतवर बुड्ढे की विद्रूप यौन कल्पनाओं की पूर्ति के लिए.

जब प्राइवेट डिटेक्टिव उस मर चुके धनपति के सहयोगी से पूछता है, ''आख़िर तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया?'' तो उसका लापरवाही और अकड़ से भरा जवाब था, ''क्योंकि हम ऐसा कर सकते थे!''

देहातों को जोड़-जोड़कर बने, भिनकते तंग से शहर मुज़फ़्फ़रपुर और पटना से लेकर चमचमाते पांच सितारा एप्स्टाइन द्वीप तक हम इसी अकड़ को बार-बार दोहराया जाता देख रहे हैं. शक्तिशाली लोग बग़ैर किसी जवाबदेही के बेख़ौफ़ ऐसा कर सकते हैं और करते जा रहे हैं. नन्हे बच्चे-बच्चियों के साथ बलात्कार, हत्या और संभवतः आदमख़ोरी भी! मतलब, जो कुछ भी घिनौना और अकल्पनीय हो सकता है, वह हो रहा है, चूंकि उनके हाथ में ताक़त है!

अपनी ज़िम्मेदारियों से कैसे दामन छुड़ाया जाता है और भोला बना जाता है, इस पर आईएफएस ऑफिसर, पूर्व राजनयिक और भारत सरकार के मंत्री हरदीप सिंह पुरी का बयान सुन लीजिए. *''हां, 2008 में एप्स्टाइन ने एक नाबालिग लड़की से यौन संबंध बनाने के अपने प्रयासों के अपराध को कुबूला था...दैट वाज़ इट! (बस इतनी सी तो बात थी!) उसकी बाक़ी करतूतें तो हमारे संज्ञान में बाद में आई थीं. और तब हमें उनपर यक़ीन नहीं हुआ था!''*

न जाने उन्हें क्यों यक़ीन नहीं हुआ था! जबकि इस कुकृत्य के लिए एप्स्टाइन को 18 महीनों की जेल हुई थी और वह 2008 में ही रजिस्टर्ड सेक्स ऑफेंडर घोषित किया जा चुका था. हरदीप पुरी को एप्स्टाइन के उत्तेजक (एक्ज़ॉटिक) द्वीप के बारे में पूरी जानकारी थी. फिर भी उसके प्रति इतनी सहानुभूति, सद्भावना और भरोसा हरदीप पुरी सहित अनेक के दिलों में क्यों जाग उठा था, यह रहस्य का विषय है. और शायद निकट भविष्य में इसका भी पर्दाफ़ाश होगा. दूसरा प्रश्न यह खड़ा होता है कि हरदीप पुरी सहित भारत की सत्ता से जुड़े लोग एप्स्टाइन से आख़िर क्यों सम्मोहित हो उठे थे इस पर भी गहन शोध करने की आवश्यकता है कि यह विशुद्ध रूप से उनकी नासमझी और नाक़ाबिलियत थी या कुछ और!

अपने यशस्वी अतीत के मुक़ाबले गिरावट के बावजूद आज भी आई.ए.एस. और आई.एफ.एस. सेवा के अधिकारी उस मेधावी समूह से आते हैं, जिनके पास इतिहास, समाजशास्त्र, भाषा और अक्सर विज्ञान का अच्छा ज्ञान होता है. बेशक, आप उनमें से अनेक को वर्ग-दंभ और टोपी की गर्मी से ग्रसित पाते हैं, जो उन्हें इंग्लैंड वापस लौट गए अपने पूर्ववर्तियों से विरासत में मिले थे. एक वक़्त था, जब इन कमज़ोरियों के बावजूद इनकी रीढ़ की हड्डी मज़बूत हुआ करती थी, वे नेताओं को संविधान सम्मत रास्ते सुझाते थे, विदेशी मुल्कों के कूटनीतिक फंदों से बचाते थे. वे मुरब्बा बनकर नेताओं के आगे थलथलाने नहीं लगते थे. किंतु ऐसे साहसी अधिकारियों की संख्या तेज़ी से सिकुड़ती जा रही है. इस संस्था में पतन इस देश की महानतम त्रासदियों में से एक माना जाएगा, जिसकी तुलना में पत्रकारिता या न्यायपालिका का पतन भी शायद फ़ीका पड़ जाए. ऐश्वर्यपूर्ण ज़िंदगी के साथ-साथ कुछ में संसद से राजभवन तक की कुलबुलाती महत्वाकांक्षाएं इन्हें राजनेताओं के आगे और भी झुकने पर मजबूर कर देती हैं. इन्हीं में से एक जगमगाते उदाहरण हैं श्री हरदीप सिंह पुरी. ये कभी अमेरिका में भारत के राजनयिक हुआ करते थे और अपराधी जेफ़्री एप्स्टाइन के सज़ायाफ़्ता हो जाने के बावजूद उससे मिलने के लिए चिरौरियां किया करते थे. उससे घरेलू-सा रिश्ता क़ायम करने के लिए आतुर थे. डिजिटल इंडिया के पैदा होने